P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-11* February- 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

गाजीपुर जनपद (उ0प्र0) में जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना: एक प्रतीक अध्ययन

A Symbol Study of the Commercial Composition of the Population in Ghazipur District (U.P.)

सुनील कुमार प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय
पीपीगंज, गोरखपुर,
(उ.प्र.) भारत

अशोक कुमार चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
श्रीमती काली देवी
महाविद्यालय, भगनें भगवानपुरी
वाया बरही, चौरी चौरा,
गोरखपुर (उ.प्र.) भारत

सारांश

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर में 2011 के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 36155515 है। जनसंख्या का औसत घनत्व जनपद में 1013 व्यक्ति वर्ग प्रति किमी0 है। कुल जनसंख्या का 33 प्रतिशत भाग कार्यरत है। जिसमें कृषि कार्य में लगे कुल कार्यरत व्यक्तियों की संख्या मुख्य कर्मकारों में 70 प्रतिशत से अधिक है। पारिवारिक एवं अन्य उद्योगों में बहुत ही कम जनसंख्या कार्यरत है। जनपद के मैदानी क्षेत्र होने के कारण तथा वाराणसी और मऊ के बीच स्थित होने के कारण यहां परिवहन मार्ग जाल और अवस्थापनात्मक तत्वों का विकास अधिक हुआ है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि संसाधन महत्वपूर्ण है।

The total population of the District is 36155515 as of 2011 in study area Ghazipur. The average density of population in the district is 1013 persons per km 0. 33 percent of the total population is employed. In which the total number of people employed in agricultural work is more than 70 percent of the main workers. A very small population is employed in family and other industries. Due to the district being a plain area and being situated between Varanasi and Mau, the transportation network, nets and infrastructural elements have developed more here. Agricultural resources are important in the study area.

मुख्य शब्द : एतदर्थ, मात्रात्मक परिवर्तन, क्षेत्रीय विभिन्नता, जनसंख्या के भरण–पोषण में सक्षम, विशिष्ट स्वरूप, कार्यरत जनसंख्या इत्यादि।

Herewith, Quantitative Change, Regional Variation, Able to maintain the Population, Specific Pattern, Working Population etc.

प्रस्तावना

ध्यातव्य है कि मानव एक महत्वपूर्ण संसाधन है, क्योंकि यह संसाधनों का जनक एवं उपभोक्ता है। किसी भी स्थान की जनसंख्या के अध्ययन का महत्व उस के मानव संसाधन के आधार के निर्धारण, संसाधनों के संरचना के विवेचन, आर्थिक तन्त्र के विश्लेषण में अधिक होता है। एतदर्थ यहा पर जनसंख्या के विविध पक्षों का संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है।

जनसंख्या वृद्धि

किसी स्थान विशेष की जनसंख्या में एक निश्चित अवधि काल में मात्रात्मक परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहते हैं। जनसंख्या में धनात्मक परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि एवं ऋणात्मक परिवर्तन को जनसंख्या ह्रास कहते है। जनसंख्या परिवर्तन को वास्तविक या प्रतिशत में ज्ञात किया जाता है। यहा की जनसंख्या वृद्धि को तीन कालों में विभक्त किया गया है।

जनसंख्या ह्रास काल (1901–1921 तक)

अध्ययन क्षेत्र में प्राकृतिक आपदाओं के कारण इस काल में जनसंख्या का ह्रास हुआ है। 1901 से सन् 1911 तक क्षेत्र की जनसंख्या में ह्रास दर घटकर –0.88 प्रतिशत रही अर्थात इस दशक में जनसंख्या में न अधिक वृद्धि हुई और नहीं अधिक ह्रास हुआ इस तरह इस काल में जनसंख्या की वृद्धि दर सामान्य स्थिति में रही है।

मध्यम वृद्धि काल–(1931–1971 तक)

इस काल के अन्तर्गत जनसंख्या की वृद्धि मध्यम रही है। सन1921 से 1931 के दशक में जनसंख्या में वृद्धि +5.5% हुयी तथा 1931 से 1941 के दशक में तीव्र गति से जनसंख्या में वृद्धि +19.44 प्रतिशत हुयी लेकिन 1941 से 1951 के दशक में वृद्धि दर घटकर + 15.82 प्रतिशत हो गयी। इस प्रकार 1951 से 1961 के दशक में वृद्धि दर में 0.01 प्रतिशत की वृद्धि हुयी जो समानुपात रूप में है। इसी प्रकार 1961 से 1971 के दशक में वृद्धि दर थोड़ा बढ़कर +15.90% हो गयी। इससे स्पष्ट होता है कि 1931 से 1971 के बीच की अवधि में 1931 से 1941 के दशक में तीव्र गति से जनसंख्या में वृद्धि हुयी है।

तीव्र वृद्धि काल (1981–2011 तक)

अध्ययन क्षेत्र में इस काल मे जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुयी है। सन् 1971 से 1981 के दशक में + 26.97 प्रतिशत, 1981–1991 के दशक में यह वृद्धि दर घटकर +24.27 प्रतिशत जबकि 1991 से 2001 के दशक में वृद्धि दर बढ़कर +26.18 प्रतिशत एवं 2001 –2011 के दशक में यह वृद्धि दर और अधिक हो गयी है।

इस प्रकार इस सम्पूर्ण काल में (1981–2001 के मध्य) जनसंख्या वृद्धि का औसत 25.81 प्रतिशत है। इसके कारण इस काल को जनसंख्या का तीव्र वृद्धि काल कहा जाता है।

उपर्युक्त जनसंख्या वृद्धि के विविध विवेचनों के स्पष्ट करने के लिए तालिका संख्या–0.1 का अध्ययन किया गया है।

तालिका संख्या – 0.1

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि का विवरण–2011

वर्ष	जनसंख्या	दशकानुसार वृद्धि % में	कुल	दशकीय अन्तर प्रतिशत में			
				ग्रामीण	नगरीय	उ0प्र0	भारत
1901	858090	NA	-	-	-	-0.90	NA
1911	788537	-8.11	-8.0	-9.0	54.0	-3.08	+5.75
1921	781560	-0.88	-1.0	-1.0	4.0	+6.6	-0.31
1931	824971	+5.55	6.0	4.0	22.0	+13.5	+11.00
1941	985380	+19.44	19.0	20.0	18.0	+21.8	+14.22
1951	1141278	+15.82	16.0	16.0	17.0	+16.7	+13.31
1961	1321578	+15.83	16.0	26.0	64.0	+16.7	+21.51
1971	1531654	+15.90	16.0	15.0	53.0	+19.7	+24.80
1981	1244669	+26.97	27.0	22.0	124.0	+25.4	+24.60
1991	2416617	+24.27	24.0	25.0	16.0	+25.55	+23.86
2001	3037582	+25.10	25.7	25.2	30.8	+25.80	+21.34
2011	3615515	+19.26	19.98	17.8	28.8	20.23	17.64

स्रोत :– जनगणना हस्तपुस्तिका जनपद गाजीपुर, वर्ष 2011 उ0प्र0 सेन्सस ऑफ इण्डिया 2011

जनसंख्या का वितरण :–

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या के वितरण में क्षेत्रीय विभिन्नता पायी जाती है। अध्ययन क्षेत्र के आठ विकास खण्डों में नगरीय जनसंख्या का वितरण पाया जाता है। यहाँ सबसे अधिक नगरीय जनसंख्या गाजीपुर विकास खण्ड में 37.56% है। जबकि सबसे कम नगरीय जनसंख्या सादात विकास खण्ड में 5.34% है। अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी एवं दक्षिणी भाग में जनसंख्या सघन पायी जाती है, जबकि मध्यवर्ती भाग में विरल। क्षेत्र में सबसे अधिक जनसंख्या का वितरण गाजीपुर विकास खण्ड में एवं सबसे कम जनसंख्या का वितरण करण्डा विकास खण्ड में पाया जाता है। इसको स्पष्ट करने के लिए जनसंख्या के आधार पर अध्ययन क्षेत्र की जनंसख्या वितरण को तीन भागों में विभाजित कया जा सकता है।

सघन जनसंख्या का वितरण

अध्ययन क्षेत्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि जनसंख्या का वितरण असमान है अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी एवं मध्यवर्ती भाग में सघन जनसंख्या पायी जाती है। इसके अन्तर्गत गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, सैदपुर, सादात, जखनिया एवं मनिहारी आदि विकास खण्ड सम्मिलित है। यहाँ विभिन्न प्रकार की सुविधाओं के केन्द्रित होने के कारण जनसंख्या का बसाव सघन पाया जाता है। इन क्षेत्रों में ग्रामीण विकास की दशाएं उच्च स्तर की पायी जाती है। जो सघन जनसंख्या के भरण–पोषण में सहायक होती है।

मध्यम जनसंख्या का वितरण

अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में कासिमाबाद बाराचवर का उत्तरी क्षेत्र एवं दक्षिणी भाग में भदौरा विकास खण्ड में मध्यम जनसंख्या का वितरण पाया जाता है। इन क्षेत्रों में मध्यम स्तर की ग्रामीण विकास की दशायें पायी जाती है तथा ये क्षेत्र जनसंख्या के भरण पोषण में सक्षम है तथा सामाजिक–आर्थिक विकास के कारण जनसंख्या के बसाव को केन्द्रित करता है। यही कारण है कि इन क्षेत्रों में जनसंख्या का वितरण मध्यम स्तर का है।

विरल जनसंख्या का वितरण

इसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या का वितरण नदियो के प्रवाह मार्ग में ही मिलता है। ये क्षेत्र बाढ़ग्रस्त होने के कारण जनसंख्या का बसाव विरल पाया जाता है। साथ ही इन क्षेत्रों में ग्रामीण विकास का स्तर एवं जनसंख्या के जीवन की प्रत्याशा निम्न स्तर की है। जो जनसंख्या के भरण–पोषण की कमी के कारण इन क्षेत्रों में कम जनसंख्या पायी जाती है। अतएव विरल जनसंख्या के अन्तर्गत सैदपुर का दक्षिणी भाग, देवकली, करण्डा, जमानिया, रेवतीपुर, भावरकोल एवं बाराचवर का दक्षिणी क्षेत्र सम्मिलित हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर

जनपद में विरल जनसंख्या का वितरण कछारी भाग में मिलता है।

जनसंख्या घनत्व

जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व आपस में घनिष्ट रूप से सम्बन्धित होते है। इसका तात्पर्य प्रति इकाई क्षेत्रफल पर निवास करने वाली जनसंख्या से है। क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व का वितरण असमान रूप से मिलता है। अध्ययन क्षेत्र मध्य गंगा के उपजाऊ मैदान में केन्द्रित होने के कारण एवं भूमि का कृषि के अनुकूल होने के कारण यहां जनसंख्या का दबाव अधिक है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व जनगणना 2001 के अनुसार 899 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है जबकि 2011 में जनसंख्या घनत्व 1013 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। यहां सबसे अधिक जनसंख्या का घनत्व गाजीपुर विकास खण्ड में 1325 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 है, जबकि भावरकोल विकास खण्ड में 761 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 जनसंख्या का घनत्व पाया जाता है। यहाँ देश का जनसंख्या घनत्व 335 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 एवं प्रदेश का जनसंख्या घनत्व 690 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है, जो अध्ययन क्षेत्र के जनसंख्या घनत्व से काफी कम है।

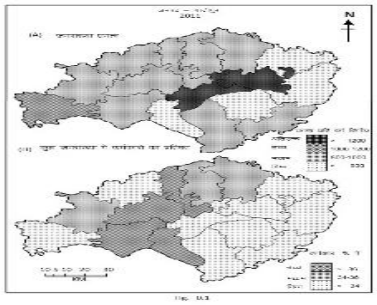

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व के रूप में अति उच्च श्रेणी के अन्तर्गत क्रमशः गाजीपुर (1325) एवं मुहम्मदाबाद (1275) विकास खण्ड सम्मिलित है। तथा उच्च श्रेणी के अन्तर्गत केवल सैदपुर (1078) विकास खण्ड सम्मिलित है। जबकि मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत कुल नौ विकास खण्ड क्रमशः विरनों, भदौरा, कासिमाबाद, जखनियां, देवकली, मरदह, जमानियां, मनिहारी एवं सादाता विकास खण्ड सम्मिलित हैं। तथा निम्न श्रेणी के अन्तर्गत करण्डा, वाराचवर, रेवतीपुर एवं भावरकोल विकास खण्ड सम्मिलित है। इसको स्पष्ट करने के लिए तालिका संख्या–0.2 मानचित्र संख्या–0.1 A का अध्ययन किया गया है।

तालिका संख्या –0.2
अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व 2011

क्रमांक	जनसंख्या घनत्व प्रतिवर्ग किमी0 में	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 1200	अति उच्च	2	12.50
2.	1000 – 1200	उच्च	1	6.25
3.	800 – 1000	मध्यम	9	56.25
4.	< – 800	निम्न	4	25.00
योग	04		16	100.00

स्रोत :– सांख्यिकीय पत्रिका का जनपद गाजीपुर 2011

उपर्युक्त तालिका–0.2 एवं मानचित्र–0.1 A से स्पष्ट होता है कि गाजीपुर मुहम्मदाबाद एवं सैदपुर विकास खण्ड में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व पाया जाता है। जिसका विस्तार उत्तरी–पश्चिमी क्षेत्र एवं मध्यवर्ती क्षेत्र में है। इन क्षेत्रों में नगरीय सुविधाओं के विकसित होने के कारण जनसंख्या घनत्व अधिक पाया जाता है। जबकि करण्डा, बारवचर, रेवतीपुर भावरकोल विकास खण्ड में जनसंख्या घनत्व क्षेत्र के निम्न स्तर का पाया जाता है। इसका विस्तार दक्षिण–पूर्वी एवं पूर्वी क्षेत्र में है। यहाँ जनसंख्या का कम होना कृषि उत्पादकता की कमी एवं उच्च मृत्यु दर तथा निम्न जन्म दर का पाया जाना है, जो एक अपवाद ही है।

जनसंख्या संरचना

जनसंख्या संरचना का तात्पर्य क्षेत्र विशेष की जनंसख्या की सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं से है। जिससे जनसंख्या का विशिष्ट स्वरूप निर्धारित होता है। संरचना को सामान्यतः दो वर्गो में रखा जाता है। सामाजिक संरचना तथा व्यावसायिक संरचना। सामाजिक संरचना के अन्तर्गत जनसंख्या की सामाजिक विशेषताओं का अध्ययन करते है, जबकि व्यावसायिक संरचना के अन्तर्गत जनसंख्या के आर्थिक पक्ष का अध्ययन किया जाता है।

सामाजिक संरचना

सामाजिक संरचना का तात्पर्य साक्षरता, परिवार, भाषा, धर्म, जाति संरचनात्मक आदि विशेषताओं से है। साथ ही सामाजिक संरचना एक ऐसी अर्थव्यवस्था के विकास से है, जिसमें सबको समान अवसर मिले, जो कि विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, सुविधाओं की उपस्थिति से प्राप्त हो सकते हैं। साथ ही विभिन्न वर्गों के मध्य आर्थिक–सामाजिक असमानता भी दूर हो सकती है। यहाँ यह दृष्टव्य है कि सामाजिक सुविधायें तो है लेकिन इसके अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र इन सुविधाओं के विस्तार की दृष्टि से उपेक्षित है।

व्यवसायिक संरचना

आर्थिक दृष्टिकोण से किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना उस क्षेत्र के संरचनात्मक संगठन का सूचक होती है। जहाँ एक तरफ जनसंख्या वितरण संसाधनों के योग एवं जनघनत्व संसाधनों के ऊपर दबाव को प्रकट करते हैं। वही दूसरी तरफ व्यावसायिक संरचना द्वारा संसाधनों के उपयोग के लिए उपलब्ध क्रियाशील जनसंख्या का ज्ञान होता है। व्यावसायिक संरचना द्वारा क्षेत्र की जनसंख्या के जीविकोपार्जन की दशा का पता चलता है। अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि अधिकांश जनसंख्या के जीविकोपार्जन का साधन कृषि है।

कुल जनसंख्या में कुल कार्यरत जनसंख्या का वितरण

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में इस समय कुल जनसंख्या 3615515 है। इसमें कुल कार्यरत जनसंख्या 1203200 है, जो कुल जनसंख्या का 33.27 प्रतिशत है। क्षेत्रीय आधार पर इसका विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि कुल कार्यरत जनसंख्या का सापेक्षिक रूप से अधिक भाग विरनो, मनियारी, करण्डा और देवकली में

मिलता है जो 36 प्रतिशत से अधिक है। न्यूनतम प्रतिशत भदौरा में मिलता है जो केवल 28.61 प्रतिशत है। इसका और अधिक स्पष्ट विवरण तालिका संख्या 0.3 एवं मानचित्र संख्या–0.1 B में दिया गया है।

तालिका संख्या –0.3

गाजीपुर जनपद में कुल जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत 2011

क्रमांक	विवरण	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	36 से अधिक	उच्च	4	25.00
2.	34 – 36	मध्यम	3	18.75
3.	34 से कम	निम्न	9	56.25
योग	03		16	100.00

स्रोत :– भारतीय जनगणना विभाग 2011

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि गाजीपुर जनपद में कुल जनसंख्या में कुल कार्यरत जनसंख्या के वितरण में लगभग समानता है। वितरण के अनुसार उच्च श्रेणी में चार विकासखण्ड सम्मिलित है जो जनपद के उत्तर में विरनो मध्यवर्ती भाग में मनिहारी दक्षिण में करण्डा और देवकली है।

इसी तरह मध्यम श्रेणी में तीन विकास खण्ड सम्मिलित हैं जो पश्चिमी भाग में सादात, उत्तरी भाग में विरनो और उत्तर–पूरब में कासिमाबाद। यहां कार्यरत व्यक्तियों का औसत 34 प्रतिशत से 36 प्रतिशत के बीच हैं। इसी तरह निम्न श्रेणी के अन्तर्गत कुल नौ विकास खण्ड हैं जो पश्चिमी भाग में जखनिया, भोरे, सैदपुर मध्यवर्ती भाग में गाजीपुर, पूर्वी भाग में वाराचवर, मुहम्मदाबाद, भावरकोल और दक्षिणी भाग में जमानिया, रेवतीपुर तथा भदौरा। इस तरह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में कुल जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या का अपेक्षाकृत अधिक भाग मध्यवर्ती पश्चिमी, दक्षिणी और उत्तरी–पूर्वी में अधिक है जबकि दक्षिणी–पूर्वी, उत्तर–पश्चिमी भाग में कम है।

कुल मुख्य कर्मकारों में कृषि कर्मकारों का वितरण

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में कुल जनसंख्या में कुल मुख्य कर्मकार 766126 हैं। इनमें कृषकों की संख्या 274443 और कृषि श्रमिकों की संख्या 219565 हैं जो कुल जनसंख्या में 494008 है। सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में इसका वितरण थोड़ी असमानता लिए हुए है। मनिहारी विकास खण्ड में सर्वाधिक कृषि कार्य करने वाले 77.1 प्रतिशत है जबकि न्यूनतम प्रतिशत 51.9 प्रतिशत गाजीपुर विकास खण्ड में है। इसका और अधिक स्पष्टीकरण तालिका संख्या 0.4 एवं मानचित्र संख्या–0.2 A में किया गया है।

तालिका संख्या –0.4

कुल मुख्य कर्मकारों में कृषि कर्मकारों का वितरण 2011

क्रमांक	विवरण	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 75.00	उच्च	3	18.75
2.	70.00 – 75.00	मध्यम	5	31.25
3.	< – 70.00	निम्न	8	50.00
योग	03		16	100.00

स्रोत :– सांख्यिकीय पत्रिका 2011

उपर्युक्त तालिका संख्या–0.4 और मानचित्र संख्या–0.2 A से स्पष्ट है कि कृषि में कार्य करने वाली सर्वाधिक जनसंख्या पूर्वी और पश्चिमी मध्यवर्ती भाग में अधिक है जिनमें मनिहारी, वाराचवर और भावरकोल विकास खण्ड सम्मिलित हैं। यहां सामान्य रूप में कुल मुख्य कर्मकारों में 75 प्रतिशत से अधिक कर्मकर कृषक तथा कृषि मजदूर हैं। 70 से 75 प्रतिशत के बीच पांच विकास खण्ड सम्मिलित हैं। जिनमें दक्षिण–पश्चिम में सादात, देवकली उत्तर में मरदह, उत्तर–प्रश्चिम में जखनिया और उत्तर–पूर्व में कासिमाबाद जबकि निम्न श्रेणी के अन्तर्गत कुल आठ विकास खण्ड सम्मिलित हैं। यहां कृषि में कार्य करने वाली कुल जनसंख्या का प्रतिशत 51.9 से 70 प्रतिशत तक हैं। इसके अन्तर्गत दक्षिण–पश्चिम में सैदपुर, उत्तर में विरनो, दक्षिणी भाग में करण्डा, रेवतीपुर, जखनिया और भदौरा हैं जबकि मध्यवर्ती और पूर्वी भाग में गाजीपुर और मुहम्मदाबाद हैं।

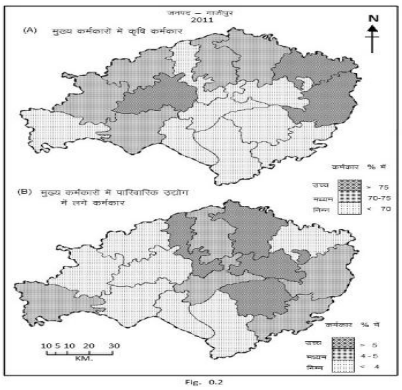

Fig. 0.2

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में कुल जनसंख्या में कृषि में कार्यरत जनसंख्या का संकेन्द्रण, दक्षिणी–पूर्वी और उत्तरी–पश्चिमी भागों में अधिक है। जबकि मध्यवर्ती और पूर्वी भाग में कम है।

कुल मुख्य कर्मकारों में पारिवारिक उद्योगों में लगे कर्मकारों का वितरण

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में कुल मुख्य कर्मकार 766126 हैं। जो कुल जनसंख्या का 21.18 प्रतिशत हैं और कुल कार्यरत जनसंख्या का 63.67 प्रतिशत हैं। इस तरह औसत रूप में पारिवारिक उद्योगों में लगी कुल जनसंख्या 38187 हैं। इसका क्षेत्रीय वितरण तालिका संख्या–0.5 एवं मानचित्र संख्या–0.2 B में दिया गया है।

तालिका संख्या –0.5

कुल मुख्य कर्मकारों में पारिवारिक उद्योग में लगे कर्मकारों का प्रतिशत 2011

क्रमांक	विवरण	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 5.00	उच्च	4	25.00
2.	4.00 – 5.00	मध्यम	5	31.25
3.	< – 4.00	निम्न	7	43.75
योग	03		16	100.00

स्रोत :– सांख्यिकीय पत्रिका 2010–11

उपर्युक्त तालिका संख्या–0.5 और मानचित्र संख्या–0.2 B के विश्लेषण से स्पष्ट है कि औसत रूप में पारिवारिक उद्योगों में लगे कर्मकारों का प्रतिशत केवल चार हैं। लेकिन क्षेत्रीय वितरण के अनुसार इसमें कुछ अन्तर पाया जाता है। मानचित्र से स्पष्ट है कि उच्च श्रेणी के अन्तर्गत चार विकास खण्ड सम्मिलित हैं जिनमें पारिवारिक उद्योगों मे लगे हुए कर्मकार 5 प्रतिशत से अधिक है। सामान्यतया उत्तरी और मध्यवर्ती, दक्षिणी भाग में रेवतीपुर, कासिमाबाद, विरनो और मुहम्मदाबाद इसी श्रेणी के अन्तर्गत हैं। इसी तरह 4 से 5 प्रतिशत के बीच में कुल 5 विकास खण्ड हैं जिसमें पूर्वी भाग में भावरकोल और भदौरा तथा उत्तरी भाग में मरदह, पश्चिम में सैदपुर और मध्यवर्ती भाग में गाजीपुर सम्मिलित हैं। 4 प्रतिशत से कम वाले विकास खण्डों में सादात, जमानिया, जखनिया, देवकली, मनिहारी, करण्डा और वाराचवर हैं। इस तरह स्पष्ट होता है कि गाजीपुर में उत्तरी पूर्वी भागों में पारिवारिक उद्योगों में कर्मकारों का अधिक प्रतिशत है जबकि मध्यवर्ती और दक्षिणी–पूर्वी में मध्यम स्तर का वितरण है। दक्षिणी और उत्तरी पश्चिमी भागों में अपेक्षाकृत पारिवारिक उद्योगों में कम कर्मकार सम्मिलित हैं।

कुल जनसंख्या में साक्षरता का प्रतिशत वितरण

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में 2011 में साक्षरता का औसत 68 प्रतिशत से 74 प्रतिशत तक हैं। सामान्य रूप से वाराचवर विकास खण्ड में यह 68.3 प्रतिशत न्यूनतम और भदौरा में 74.9 प्रतिशत अधिकतम है। साक्षरता का क्षेत्रीय वितरण तालिका संख्या–0.6 में दिखाया गया है।

तालिका संख्या –0.6

कुल जनसंख्या में साक्षरता का प्रतिशत वितरण

क्रमांक	वितरण	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 72.00	उच्च	3	18.75
2.	70.00 – 72.00	मध्यम	10	62.05
3.	< – 70.00	निम्न	3	18.75
योग	03		16	100.00

स्रोत :– सांख्यिकीय पत्रिका 2010–11

उपर्युक्त तालिका संख्या–0.6 से स्पष्ट है कि 72 प्रतिशत अधिक साक्षरता भदौरा, करण्डा, भोरे, गाजीपुर विकास खण्डों में मिलता है जबकि 76 से 72 प्रतिशत के बीच जमानिया, रेवतीपुर, देवकली, सैदपुर, मुहम्मदाबाद, भावरकोल, विरनो, जखनिया, सादात तथा मरदह में हैं। 70 प्रतिशत से कम के बीच मनिहारी, कासिमाबाद, भोरे, वाराचवर। इस तरह स्पष्ट होता है कि गाजीपुर जनपद में साक्षरता का वितरण प्रतिरूप दक्षिण से उत्तर की ओर कम होता गया है। सामान्य रूप में अधिक साक्षर जनसंख्या दक्षिणी और मध्यवर्ती–पूर्वी भागों में रहती है।

तालिका संख्या–0.7

जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना 2011

क्र. सं.	विकास खण्ड	कुल जनसंख्या	कुल कार्यरत	सीमान्त कर्मकार	मुख्य कर्मकार	कृषक	कृषि मजदूर	पारिवारिक और अन्य उद्योग	अन्य	योग
1	जखनिया	186321	65382	24163	41219	27454	3225	2413	8127	100
2	मनिहारी	185175	60399	17234	43165	28985	5127	2167	6886	100
3	सादात	183087	58276	17710	40566	27692	4259	1940	6675	99.99
4	सैदपुर	209307	66719	23066	43653	25491	4477	2771	10914	100
5	देवकली	192257	69501	24556	44945	29042	4139	1989	9785	100
6	विरनो	134781	45154	16524	28630	18812	2660	1676	5482	100
7	मरदह	157230	56024	24537	31487	20117	3338	1780	6252	100
8	गाजीपुर	171751	53709	16748	36961	18015	3826	1947	13181	100
9	करण्डा	123257	36419	12656	23763	13826	2838	1422	5677	99.99
10	कासिमाबाद	199682	65724	23180	42544	24389	7042	2774	8339	100
11	वाराचवर	162486	52975	17706	35269	16988	9132	2290	6859	100
12	मोहम्मदाबाद	187139	55760	13667	42093	18840	9483	2513	11257	100
13	भावरकोल	163378	49593	11458	38135	15196	13733	1840	7366	100
14	जमानिया	209024	65176	24447	40729	18722	11035	1677	9295	100
15	रेवतीपुर	151545	47222	15585	31637	11977	11016	1676	6968	100
16	भदौरा	187792	47197	13421	33776	12638	8557	1733	10848	100
	कुल योग	2804212	895230	296658	598572	328184	103887	32590	133911	

परिवहन एवं अवस्थापना तत्व

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद मैदानी भाग में स्थित है। इसलिए परिवहन व्यवस्था यहां सड़क और जल मार्ग के रूप में पहले से विकसित रही है, ब्रिटिश काल में गंगा नदी एक आन्तरिक जलमार्ग के रूप में प्रचलित रही है। वर्तमान समय में यहां सड़क मार्ग और रेलमार्ग दोनों अधिक प्रचलित है।

रेल मार्ग

गाजीपुर जनपद में तीन रेलमार्ग हैं–

मऊ–वाराणसी रेलमार्ग

यह रेल मार्ग मऊ और वाराणसी को जोड़ता है। मौढ़ियार से इसकी एक शाखा पश्चिम में जौनपुर चली गयी है।

वाराणसी–बलिया मार्ग

गाजीपुर के मध्यवर्ती भाग में यह गोमती नदी को पार करके मौढ़ियार, सैदपुर, देवकली, गाजीपुर, मुहम्मदाबाद होते हुए बलिया को चला गया है।

बक्सर–मुगलसराय मार्ग

यह रेलमार्ग पटवा वाराणसी और दिल्ली मार्ग का एक भाग है। अध्ययन क्षेत्र के दक्षिणी–पूर्वी भाग में यह जमानिया, दिलदारनगर, भदौरा होकर बक्सर चला जाता है। इसकी एक शाखा दिलदारनगर से लेकर गाजीपुर के निकट गंगा तट पर स्थित ताड़ीघाट तक गयी है। इस तरह अध्ययन क्षेत्र में कुल रेल मार्गों की लम्बाई 1931 किमी0 है। इन रेलमार्गो पर हाल्ट सहित कुल 33 रेलवे स्टेशन हैं।

सड़क मार्ग

गाजीपुर जनपद में कुल सड़क मार्गों की लम्बाई 5222 किमी0 है। इसमें 4131 किमी0 लोक निर्माण विभाग के अन्तर्गत हैं। शेष जिला पंचायत के अन्तर्गत हैं। कुल सड़क मार्गों पर जिले में कुल 592 बस स्टेशन और बस स्टाप हैं। जनपद में मुख्य सड़क मार्ग वाराणसी से सैदपुर, देवकली, गाजीपुर, मऊ होते हुए गोरखपुर मार्ग हैं, जो राष्ट्रीय राजमार्ग 29 है। अन्य महत्वपूर्ण सड़कों में गाजीपुर से दक्षिण में जमानिया होकर चंदौली बिहार राजमार्ग हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण सड़क जमानिया, भदौरा होकर बक्सर को जाती है। दूसरी सड़क गाजीपुर, मुहम्मदाबाद से होकर बक्सर को जाने वाला मार्ग हैं। अन्य महत्वपूर्ण मार्गों में गाजीपुर, विरनो होकर आजमगढ़ मार्ग और गाजीपुर से कासिमाबाद होकर मऊ मार्ग। इसके अतिरिक्त जनपद में अन्य मार्ग अपेक्षाकृत स्थानीय कस्बों और बाजारों को जोड़ते हैं।

ग्रामीण विकास में स्वैच्छिक ऐजन्सियों की भूमिका तथा ग्रामीण विकास में प्रयोग के अन्तर्गत प्रतीकात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण विकास पर विभिन्न विद्वानों द्वारा कार्य हुए हैं। अरोरा (1978)[1] ने उद्योग और ग्रामीण विकास तथा रामचन्द्रन (1980)[2] ने गाँवों के झुण्ड और ग्रामीण विकास पर पुस्तक प्रकाशित की है। मिनाती सिंह (1985)[3] ने ग्रामीण विकास योजना, आजमगढ़ जनपद का प्रतीक अध्ययन, मोहसीन (1985) ने सरकारी कार्यक्रमों द्वारा ग्रामीण विकास, महेश्वरी (1985)[4] भारत में ग्रामीण विकास, आर0पी0 मिश्रा (1985)[5] ने ग्रामीण विकास, पूँजीवाद और समाजवादी मार्ग की संकल्पना, चटोपाध्याय (1985)[6] ने भारत में ग्रामीण विकास योजना, चन्द्रशेखर (1985)[7] ने भारत में ग्रामीण विकास कार्यक्रम, देवेन्द्र ठाकुर (1986)[8] ने भारत में ग्रामीण विकास और राजनीतिक नेतृत्व, भदौरिया (1986) ने ग्रामीण विकास का यथार्थ चित्रण, आर0बी0 सिंह (1986)[9] ने ग्रामीण विकास का भूगोल विषय पर अध्ययन किया है।

अन्य अवस्थापना तत्व

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में सामाजिक–आर्थिक रूपान्तरण को प्रभावित करने वाले कई अन्य अवस्थापना तत्व महत्वपूर्ण हैं, जिनमें कुल डाकघरों की संख्या ग्रामीण क्षेत्र में 359 और नगरी क्षेत्र में 19 है। जिले में कुल राष्ट्रीय बैंक 113 और अन्य 39 है। ग्रामीण बैंक शाखाएं 76 है। सहकारी बैंक 21 है। सस्ते गल्ले की दुकाने 1421 हैं। बायोगैस संयंत्र 77 हैं। कुल पशुचिकित्सालय 40 है। पशु सेवा केन्द्र 48 और कृषि ऋण सहकारी समितियां 182 है। इसी तरह जिले में कुल पंजीकृत कारखाने 45 हैं और कुल लघु औद्योगिक इकाइयां 18612 हैं। जनपद में कुल प्राथमिक विद्यालय 3354, कुल प्राथमिक विद्यालय 916,माध्यमिक विद्यालय 864, महाविद्यालयों की संख्या 89 हैं। स्नातकोत्तर महाविद्यालय 17 हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं में एलोपैथिक चिकित्सालय 33, आयुर्वेदिक 45, होमियोपैथिक 27 हैं। जबकि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र 65 हैं। परिवार मे मातृ शिशु कल्याण उपकेन्द्र 393 हैं। मनोरंजन के साधनों में जनपद में कुल सिनेमाघर 5 हैं। इनमें कुल सीटों की संख्या 2530 है। इस तरह जनपद में अवस्थापनातत्व गांव की संख्या और कुल जनसंख्या के अनुपात में लगभग औसत रूप में हैं।

निष्कर्ष

अतः यह कहा जा सकता है कि गाजीपुर जनपद में विभिन्न भौतिक और मानवीय विशेषताएं क्षेत्रीय वितरण के अनुसार यहां के सामाजिक आर्थिक भूदृश्य का निर्धारण करती है। इसका सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि भौतिक तत्वों की अनुकूल स्थितियों में ही मानवीय क्रिया कलाप विकसित होते हैं। गाजीपुर जनपद में उत्तरी एवं मध्यपूर्व का समतल मैदानी भाग सघन जनसंख्या और विकसित कृषि में भी महत्वपूर्ण हैं। अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि पर जनसंख्या का दबाव अधिक है। इसीलिए जनसंख्या के भरण–पोषण हेतु कृषि गहनता भी अधिक हो रही है। जनपद के गाजीपुर, मुहम्मदाबाद से लेकर मरदह तक के विकास खण्डों में दो फसलीय कृषि क्षेत्रों में अधिक वृद्धि हुई है।

References

1. *Arora, R.C. (1978): Industry and Rural Development S. Chand Co., New Delhi.*
2. *Ram, Chandran (1980): Village Clusters & Rural Development, Concept, New Delhi.*
3. *Singh, Minati (1985): Azamgarh District: A Case Study in Rural Development Planning National Geographers Vol.20 No.1, P. 55.*
4. *Maheswari, S.R. (1985): Rural Development in India Sage, New Delhi.*
5. *Mishra, R.P. (1985): Rural Development: Capitalist and socialist Path, Concept, New Delhi.*
6. *Chatopadhyay, B.C. (1985): Rural Development: Planning in India, S. Chand, New Delhi.*
7. *Chandra Shakheran & K.S. (1985): Rural Development Programmes in India, The Indian Geographical Journal Vol. 60 No. 2, PP 150-160.*
8. *Thakur, Devendra (1986): Rural Development and Political Leadership in India, Deep & Deep, New Delhi, P.7.*
9. *Singh, R.B. (1986): Socio Cultural and Spatial Element in Rural Development.*